DELTA Pg No. Date / /

संजीवनी पब्लिक स्कूल : दत्त कार्य
विषय : हिन्दी कक्षा : आठवीं
पाठ 2 : हास्य कथा लेखक : हरिशंकर परसाई
नाम : बस की यात्रा अभ्यास कार्य :—
पाठ से :- मौखिक :-
सोचिए और बताइए -

(क) लेखक और उनके मित्रों ने शाम की बस से सफ़र करना क्यों तय किया ?

उत्तर लेखक और उनके मित्रों ने शाम की बस से सफ़र करना तय किया क्योंकि उन्हे जबलपुर जाना था और पन्ना से सतना उन्हे इसी कंपनी की बस से जाना था।

(ख) पाठ में महात्मा गाँधी जी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलनों की चर्चा क्यों की गई है ?

उत्तर असहयोग आन्दोलन :- इस आन्दोलन का अर्थ है किसी का सहयोग न करना।
सविनय अवज्ञा आन्दोलन : विनय पूर्वक किसी की आज्ञा का पालन करने से इन्कार करना।
बस के चलने की स्थिति को देखकर लेखक को लगा कि बस अपने ड्राइवर को चलने से इन्कार करती है।

(ग) 'इसे तो किसी क्रांतिकारी आन्दोलन का नेता होना चाहिए।' यह कथन किसके लिए और क्यों कहा गया है ?

उत्तर यह कथन कंपनी के उस हिस्सेदार बस के लिए कहा गया है क्योंकि वह बस के टायरों को देखते हुए भी जान हथेली पर लेकर रोज बस में सफ़र करता और कराता था।

लिखित

प्रश्न 1. संकेत गद्यांश को पाठ में ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें :-
संकेत :- बस की रफ्तार - - - - - करनी पड़ेगी। (पृष्ठ-14)
(क) लेखक किसे अपना दुश्मन समझ रहे थे ? और क्यों ?

Scanned with CamScanner

उत्तर लेखक हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहे थे, क्योंकि उसे लगता था कि बस पेड़ से टकरा जाएगी और सब मारे जाएंगे।

ख रास्ते में झील दिखने पर लेखक के मन में क्या विचार उठते?

उत्तर झील को देखकर लेखक को लगता था कि बस झील में गोता लगा देगी।

ग वृक्षों की छाया में खड़ी बस किसके समान लग रही थी?

उत्तर वृक्षों की छाया में खड़ी बस किसी बूढ़े व्यक्ति के समान लग रही थी, जैसे वह तपती धूप से वृक्षों की छाया में राहत पा रहा हो।

2. अति लघु उत्तर लिखिए:-

क) लेखक को कहाँ जाना था।

उत्तर लेखक को जबलपुर (मध्यप्रदेश) जाना था।

ख) बस को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा क्यों उमड़ पड़ी?

उत्तर बस की वयोवृद्ध (टूटी-फूटी और अत्यधिक पुरानी) स्थिति को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा उमड़ पड़ी थी।

(ग) पेट्रोल की टंकी में छेद हो जाने पर बस के ड्राइवर ने क्या किया?

उत्तर टंकी में छेद होने पर उसका पेट्रोल एक बालटी में निकाल कर अपनी बगल में रख कर नली से इंजन में पेट्रोल भेजने लगा।

3. लघु उत्तर लिखिए—

क. लेखक के अनुसार लोग शाम वाली बस में सफर क्यों नहीं करते होंगे?

उत्तर लेखक के अनुसार लोग डाकुओं के भय से शाम वाली बस में सफर नहीं करते होंगे।

ख. लेखक को ऐसा क्यों लगा कि दौड़ने आए लोग उन्हें अंतिम विदाई दे रहे हैं?

उत्तर बस की टूटी-फूटी स्थिति को देख कर लेखक को लगा कि शायद वह सही सलामत अवस्था में घर नहीं पहुँच पाएगा अथवा घर वापिस ही नहीं आ पाएगा।

Scanned with CamScanner

DELTA Pg No.
Date / /

ग. बस स्टार्ट होने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ?

उत्तर लेखक को लगा कि बस को गाँधी जी के 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' और 'असहयोग आन्दोलन' का प्रशिक्षण मिला हुआ है।

दीर्घ उत्तर लिखिए :-

क लेखक की बस यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर 'बस की यात्रा' पाठ एक हास्य कथा (व्यंग्य कथा) है जिसमें देश के यातायात के साधनों पर व्यंग्य करते हुए हास्य कथा का रूप दिया गया है।

लेखक सहित पाँचों मित्रों ने जबलपुर जाना था यह सोच कर वह बस अड्डे पर बस लेने आए. वहाँ पहुँच कर लेखक को पता लगा कि इसी कंपनी की बस से सतना पहुँचा जा सकता था। पर बस की स्थिति इतनी बुरी थी कि ऐसा लगता था शायद बस स्टार्ट नहीं हो पाएगी। बस की स्थिति को देखकर ऐसा लगता था कि वह इतनी पुरानी अर्थात वयोवृद्ध थी कि उसकी केवल पूजा ही की जा सकती थी। जब बस चली तो वह इतनी भयानक आवाज़ कर रही थी कि वह टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर जाएगी या रास्ते में आने वाले किसी भी पेड़ से टकरा कर दुर्घटना ग्रस्त हो कर सभी सवारियों को मृत्यु के घाट उतार देगी। फिर बस. पेट्रोल की टंकी का लीक होना. और टायर का घिसा होना सब के कारण लगा कि हम समय पर वापस नहीं पहुँच पाएंगे। तब परिस्थिति के अनुसार हम लोग तसल्ली से बैठकर आपस में हँसी-मजाक करने लगे।

ख पाठ के अंत में लेखक ने बस को अपना घर क्यों मान लिया?

उत्तर जब बस की टंकी में छेद हो गया, उसका एक टायर जवाब दे गया, दूसरा टायर भी अन्तिम साँसें ले रहा था जिससे यात्रियों को स्पष्ट हो गया था कि बस

Page 3

न जाने कब पहुँचेगी और पता नहीं पहुँचेगी भी कि नहीं, तब लेखक ने बस को अपना घर बना लिया और हँसी-मज़ाक शुरू कर दिया।

पाठ से आगे

प्रश्न बस की हालत देखते हुए भी लेखक के चेहरे पर क्रोध के भाव नज़र नहीं आते, इससे लेखक के कौन-कौन से गुणों का पता चलता है।

उत्तर लेखक हरिशंकर परसाई में निम्न गुण दिखाई देते हैं:-

1. वह क्रोध रहित है। 2. जीवन में हर स्थिति को सकारात्मक भाव रखते हैं।

3. वह निराश नहीं होते। 4. जीवन के हर पल का आनंद लेते हैं।

भाषा ज्ञान :- प्रश्न 2. दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगा कर वाक्य लिखिए — उत्तर :-

क. बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी? (क) बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी।

ख. आठ। दस मील चलने पर सारे भेदभाव (ख) आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए, मिट गए।

ग. वे कह रहे थे। बस तो फ़र्स्ट क्लास है (ग) वे कह रहे थे, "बस तो फ़र्स्ट क्लास है जी।" जी,

घ. लगता था? जिन्दगी इसी बस में (घ.) लगता था, जिन्दगी इसी बस में गुज़ारनी है। गुजरानी है?

ङ. हमारी बेताबी। तनाव खत्म हो गए (ङ.) हमारी बेताबी-तनाव खत्म हो गए।

च. आप शाम वाली बस से क्यों जा (च.) आप शाम वाली बस से क्यों जा रहे हैं। रहे हैं?

प्रश्न 3. 'बस, बस, बस' शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए दो-दो वाक्य बनाओं:-

उत्तर बस:- बस की यात्रा आराम दायक नहीं थी।

आज हम बस से चलते हैं।

Scanned with CamScanner

वश :- भगवान के लिखे पर किसी का वश नहीं है।
अपनी इच्छाओं पर वश रखना आसान नहीं होता।

बस :- बस बहुत हो चुका।
बस शांत रहा करो।

दिए गए मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य - प्रयोग कीजिए:

मुहावरा :- आगा-पीछा करना
अर्थ :- अच्छा-बुरा कहना
वाक्य :- बस ड्राइवर और लेखक में आगा-पीछा होने लगा।

मुहावरा :- जान हथेली पर रखना
अर्थ :- जान की परवाह न करना
वाक्य :- भारतीय सैनिक जान हथेली पर ले कर चलते हैं।

* * * * * * *

Scanned with CamScanner

नेता होना चाहिए। अगर बस नदी में गिर पड़ती और हम सब मर जाते, तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते–"वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया पर टायर नहीं बदला।"

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है और इससे सीधे उस लोक को **प्रयाण** कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव ख़त्म हो गए। हम बड़े **इत्मीनान** से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

–हरिशंकर परसाई

मूल्य: जीवन के हर पल का आनंद लेना, निराश न होना।

लेखक परिचय: श्री हरिशंकर परसाई का जन्म सन 1922 में होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था। एम०ए० करने के पश्चात कुछ समय तक इन्होंने अध्यापन कार्य भी किया परंतु फिर लेखन कार्य की ओर झुक गए। सन 1984 में साहित्य अकादमी ने इनकी पुस्तक 'विकलांग श्रद्धा का दौर' पर इन्हें पुरस्कृत किया। मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग ने भी इन्हें पुरस्कार प्रदान किया। इनका समस्त साहित्य 'परसाई रचनावली' के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– उपन्यास: रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज; **लेख:** तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत आदि।

शब्द-अर्थ

क्षीण – कमज़ोर
उत्सर्ग – त्याग, बलिदान
ग्लानि – दुख, खेद
इत्मीनान – तसल्ली
रंक – गरीब, दरिद्र
असहयोग – मिलकर काम न करना
अनुभव – काम की जानकारी, तजुर्बा
इत्तफ़ाक – संयोग, अचानक होने वाली घटना
बॉडी – बस या अन्य वाहन का बाहरी ढाँचा
आगा-पीछा करना –अच्छा-बुरा कहना

रफ़्तार – गति, चाल
निमित्त – कारण, उद्देश्य
प्राणांत – मृत्यु
स्टार्ट – चालू
हिस्सेदार – अंशधारी
गोता – डुबकी लगाना
अंत्येष्टि – मृत्यु के बाद किया जाने वाला कर्मकांड
कूच – एक स्थान से दूसरे स्थान जाना
स्टियरिंग – वाहन की दिशा बदलने का पहिएनुमा यंत्र

बियाबान – जंगल, वन
प्रयाण – प्रस्थान, कूच
विश्वसनीय – भरोसे के योग्य
वयोवृद्ध – अधिक उम्रवाला, वृद्ध
मील – 1760 गज़ की दूरी
दुर्लभ – कठिनाई से प्राप्त होने वाला

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** वयोवृद्ध, वृद्धावस्था, निमित्त, प्रशिक्षण, स्टियरिंग, इत्तफ़ाक, प्राणांत, अंत्येष्टि, इत्मीनान, प्रयाण, क्रांतिकारी।

Scanned with CamScanner